राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ की प्रमुख जन गोष्ठी

महिदपुर। संघ शताब्दी वर्ष के अंतर्गत नगर में प्रमुख जन गोष्ठी का आयोजन स्थानीय अमर सुहाग गार्डन में किया गया जिसमें उज्जैन ग्रामीण जिला संघचालक हाकमसिंह डोडिया एवं मालवा प्रांत प्रचार प्रमुख जयशंकरजी शर्मा उपस्थित रहे। शताब्दी वर्ष में वृहद गृह संपर्क बृहद गृह संपर्क अभियान के अंतर्गत 37 प्रति में 390000 ग्रहण में स्वयंसेवकों द्वारा 10 करोड़ सदस्यों से संपर्क किया गया। 11 प्रति में अभिवृद्धि गृह संपर्क शेष रहा है।मालवा प्रांत में 12246 गांवों में 32 लाख परिवारों में संपर्क किया गया।जनवरी में हिंदू सम्मेलन का आयोजन किया गया जिसमें 3.30 करोड़ लोगों को हिंदू सम्मेलन में आमंत्रित किया गया।इस कार्य में 70 लाख स्वयंसेवक लगे और 2350 स्थान पर हिंदू सम्मेलन आयोजित किया गया।संघ 1925 में नागपुर से प्रारंभ हुआ और एक अच्छे उद्देश्य को लेकर इस संगठन का प्रारंभ किया गया। प्राचीन समय में भी भारत की जीडीपी पूरे विश्व का 24.5त्न थी।यह और दुनिया का सबसे बड़ा जहाज भी भारत के पास था। यह इस बात को संकेत करता है कि सनातन समय में भी प्राचीन काल में भी भारत एक समृद्धशाली देश था।भाई साहब ने अपने उद्बोधन में संघ के बारे में कहा कि संघ एक सामाजिक संगठन है जिसमें व्यक्ति निःस्वार्थ भाव से कार्य करते हैं और उनके व्यवहार में प्रमाणिकता,सुचिता,पारदर्शिता अर्थात उनके कथनी और करनी में किसी प्रकार का अंतर नहीं रहता है।आरएसएस समाज के द्वारा दिए गए सहयोग से ही अपने कार्य को आगे बढ़ाता है।समाज उन्मुक्त समाज के उन्नति के लिए संघ के स्वयंसेवकों की यह विशेषता रहती है कि जहां अपेक्षित वहां उपस्थित। वर्तमान में अभी पूरे देश में 3550 के कार्य कर रहे हैं और ग्रस्त प्रचारकों के रूप में स्वयंसेवक निरंतर लगातार इस देश की उन्नति के लिए सतत कार्य में रखे।संघ में स्वयंसेवकों का शुद्ध सात्विक प्रेम ही आपस में एक दूसरे को जोड़कर के रखना संघ के चार दौर जिसमें प्रथम उसमें प्रथम दौर में 20 से 25 वर्ष में संघ का उपवास कल रहा।गोष्ठी में आए प्रबुद्धजन की कुछ जिज्ञासा भी थी और उनका समाधान भी आदरणीय भाई साहब द्वारा किया गया।

वार्ता : जीवन के अधूरे सपनों पर आचार्य डॉ. महेंद्र सिंह गोले से एक गहन संवाद

शाम का समय था। सूरज ढल रहा था, जैसे किसी थके हुए आदमी की तरह दिन भर की भागदौड़ के बाद वह भी विश्राम चाहता हो। उसी शांत वातावरण में मेरी मुलाकात हुई आचार्य डॉ. महेंद्र सिंह गोले से। चेहरे पर गहराई, आंखों में अनुभव, और शब्दों में जीवन की सच्चाई लिए हुए वे बैठे थे।

मैंने बातचीत की शुरुआत उन्हीं पंक्तियों से की–

एक आदमी अपनी पूरी उम्र बस नौकरी करते-करते गुज़ार देता है...

आचार्य जी मुस्कुराए, लेकिन उस मुस्कान में एक हल्की सी कसक थी।

प्रश्न : आचार्य जी, क्या सच में आज का इंसान सिर्फ जी रहा है या बस जीवन काट रहा है?

आचार्य जी : देखिए, आज का इंसान जी नहीं रहा, वह निभा रहा है। बचपन से ही उसे सिखा दिया जाता है कि अच्छा पढ़ो, नौकरी करो, घर संभालो–और इसी चक्र में वह अपने स्व को भूल जाता है।

जब एक बच्चा पैदा होता है, उसके पास अनगिनत सपने होते हैं। वह कुछ बनना चाहता है, कुछ अलग करना चाहता है। लेकिन धीरे-धीरे समाज, परिवार और परिस्थितियाँ उसे एक तय रास्ते पर धकेल देती हैं।

वह रास्ता गलत नहीं है, लेकिन वह अधूरा है।

प्रश्न : आपने कहा कि रास्ता गलत नहीं, लेकिन अधूरा है—यह अधूरापन कहाँ से आता है?

आचार्य जी : अधूरापन मन की आवाज़ को दबाने से आता है। सोचिए, एक व्यक्ति सुबह उठता है, ऑफिस जाता है, शाम को लौटता है–और यही क्रम सालों-साल चलता रहता है। बीच में कभी वह खुद से पूछता ही नहीं–क्या मैं खुश हूँ?

उसकी इच्छाएँ धीरे-धीरे दबती जाती हैं। उसे लगता है कि अभी जिम्मेदारी है, बाद में जी लेंगे। लेकिन वह बाद कभी आता ही नहीं।

प्रश्न : बचपन से लेकर शादी तक जिम्मेदारियों का यह जो जाल है, क्या यह ज़रूरी है या यह एक सामाजिक दबाव है?

आचार्य जी : जिम्मेदारियाँ ज़रूरी हैं, लेकिन उनका बोझ बन जाना समस्या है। बचपन में माता-पिता की अपेक्षाएँ, फिर करियर की दौड़, और शादी के बाद परिवार की जिम्मेदारियाँ–इन सबके बीच व्यक्ति खुद को भूल जाता है। वह सोचता है कि मैं अपने लिए बाद में समय निकालूंगा। लेकिन जीवन का सबसे बड़ा भ्रम यही है–बाद में। जीवन कभी रुकता नहीं। समय किसी के लिए नहीं ठहरता।

प्रश्न : क्या यही कारण है कि अंत में इंसान के पास सिर्फ काश रह जाता है?

आचार्य जी : बिल्कुल। जब व्यक्ति अपने जीवन के अंतिम पड़ाव पर पहुंचता है, तब वह पीछे मुड़कर देखता है। और उसे महसूस होता है कि उसने

बहुत कुछ किया– लेकिन अपने लिए कुछ नहीं किया।

वह सोचता है– - काश मैं वो यात्रा कर पाता...

- काश मैं अपने सपनों को मौका देता...
- काश मैं थोड़ा अपने लिए भी जीता...

यह काश ही सबसे बड़ा दर्द है। क्योंकि यह उस जीवन की गवाही देता है जो जीया जा सकता था, लेकिन जीया नहीं गया।

प्रश्न : क्या इसका कोई समाधान है? क्या इंसान इस चक्र से बाहर निकल सकता है?

आचार्य जी : समाधान हमेशा होता है, बस हमें उसे स्वीकार करने का साहस चाहिए।

पहली बात–अपने मन की सुनना सीखिए।

हर दिन अपने आप से एक सवाल पूछिए– क्या मैं वही कर रहा हूँ जिससे मुझे सुकून मिलता है?

अगर जवाब नहीं है, तो कुछ बदलने की जरूरत है।

प्रश्न : लेकिन अक्सर लोग कहते हैं कि जिम्मेदारियों के बीच अपने लिए समय निकालना संभव नहीं है—आप क्या कहेंगे?

आचार्य जी : यह पूरी तरह सच नहीं है।

समस्या समय की नहीं, प्राथमिकता की है।

हम दिन भर में कितनी चीजों के लिए समय निकाल लेते हैं–

- सोशल मीडिया
- बेवजह की बातचीत
- अनावश्यक चिंताएँ

अगर हम चाहें, तो अपने लिए 30 मिनट भी निकाल सकते हैं।

और वही 30 मिनट धीरे-धीरे जीवन बदल सकते हैं।

प्रश्न : अगर कोई व्यक्ति आज यह महसूस करे कि वह अपने जीवन में खो गया है—तो उसे क्या करना चाहिए?

आचार्य जी : सबसे पहले–रुकिए। भागना बंद कीजिए। कुछ समय अकेले बिताइए।

अपने आप से बात कीजिए–

- आपको क्या पसंद है?
- आपको किस चीज़ से खुशी मिलती है?
- आपने कौन से सपने दबा दिए हैं?

फिर छोटे-छोटे कदम उठाइए।

जीवन एकदम से नहीं बदलता, लेकिन धीरे-धीरे बदलता जरूर है।

प्रश्न : क्या उम्र बीत जाने के बाद भी सपनों को जीना संभव है?

आचार्य जी : सपनों की कोई उम्र नहीं होती।

समस्या यह है कि हम खुद ही तय कर लेते हैं कि अब देर हो गई।

लेकिन सच यह है–

जब तक सांस है, तब तक अवसर है।

आप 40 में भी शुरू कर सकते हैं, 50 में भी, 60 में भी।

जरूरत सिर्फ एक फैसले की है।

प्रश्न : आज की युवा पीढ़ी को आप क्या संदेश देना चाहेंगे?

आचार्य जी : युवा पीढ़ी के लिए मेरा एक ही संदेश है– संतुलन बनाइए।

सिर्फ करियर मत बनाइए, जीवन भी बनाइए।

- पैसे कमाइए, लेकिन खुशी मत खोइए
- जिम्मेदारियाँ निभाइए, लेकिन खुद को मत भूलिए
- सपने देखिए, और उन्हें जीने का साहस रखिए

प्रश्न : और उन लोगों के लिए जो पहले ही इस चक्र में फंस चुके हैं?

आचार्य जी : उनके लिए मैं सिर्फ इतना कहूंगा–

अभी भी देर नहीं हुई है।

आप अपने जीवन की दिशा बदल सकते हैं।

थोड़ा सा समय अपने लिए निकालिए।

छोटी-छोटी खुशियों को अपनाइए।

और सबसे जरूरी–

अपने जीवन को सिर्फ निभाइए मत, उसे जीइए।

निष्कर्ष- उस दिन की बातचीत मेरे लिए सिर्फ एक इंटरव्यू नहीं थी, बल्कि एक आईना थी–जिसमें मैंने खुद को भी देखा।

हम सभी कहीं न कहीं उसी आदमी की तरह हैं– जो सुबह से शाम तक बस दौड़ता रहता है। जो अपने सपनों को बाद में के लिए टालता रहता है। जो जिम्मेदारियों के बीच खुद को खो देता है। लेकिन शायद जीवन का असली अर्थ यही है– जिम्मेदारियों के साथ-साथ अपने अस्तित्व को भी जीना। क्योंकि अंत में– न तो पद मायने रखता है, न ही पैसा... अगर कुछ रह जाता है, तो वो है– हमारे अधूरे सपने और एक काश। और अगर हम चाहें– तो उस काश को काश नहीं, मैंने किया में बदल सकते हैं। बस जरूरत है– एक कदम उठाने की, अपने लिए। जीवन को मत टालिएज्‌ क्योंकि जीवन इंतज़ार नहीं करता।

रील्स : फेसबुक और इंस्टाग्राम पर व्यवसाय विकास के लिए एक शक्तिशाली उपकरण

आज की तेज गति वाली डिजिटल दुनिया में, लघु वीडियो सामग्री ध्यान आकर्षित करने के सबसे प्रभावी तरीकों में से एक बन गई है। फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफॉर्म ने (त्रद्गद्यह्य) को पेश किया है, जो एक ऐसी सुविधा है जो उपयोगकर्ताओं को आकर्षक लघु वीडियो बनाने और साझा करने की अनुमति देती है। मनोरंजन की प्रवृत्ति के रूप में शुरू हुआ यह अब एक शक्तिशाली व्यावसायिक उपकरण बन गया है, जो ब्रांडों को दर्शकों से जुड़ने, दृश्यता बढ़ाने और बिक्री बढ़ाने में मदद करता है।

व्यवसाय के लिए रील्स क्यों मायने रखती हैं- रील्स को त्वरित, दृश्यात्मक रूप से आकर्षक और उपभोग करने में आसान बनाने के लिए डिज़ाइन किया गया है। ध्यान अवधि कम होने के कारण, व्यवसायों को ऐसी सामग्री की आवश्यकता होती है जो दर्शकों को तुरंत आकर्षित कर सके और रील्स ठीक वैसा ही करती हैं। पारंपरिक पोस्टों के विपरीत, रील्स को अक्सर प्लेटफॉर्म एल्गोरिदम द्वारा बढ़ावा दिया जाता है, जिससे छोटे व्यवसाय भी बिना भारी विज्ञापन लागत के बड़े दर्शकों तक पहुंच सकते हैं।

ब्रांड दृश्यता बढ़ाना- रील्स का सबसे बड़ा फायदा ब्रांड दृश्यता बढ़ाने की उनकी क्षमता है। जब कोई व्यवसाय लगातार रचनात्मक और प्रासंगिक वीडियो पोस्ट करता है, तो वह प्लेटफॉर्म के अन्वेषण या खोज अनुभागों में दिखाई दे सकता है। इससे ब्रांडों को उन संभावित ग्राहकों तक पहुंचने में मदद मिलती है जो शायद पहले से ही उनका अनुसरण नहीं कर रहे हैं। एक अच्छी तरह से तैयार रील वायरल हो सकती है, जिससे ब्रांड की पहचान में काफी वृद्धि होती है।

लागत प्रभावी विपणन रणनीति- स्टार्टअप और छोटे व्यवसायों के लिए विपणन बजट अक्सर सीमित होता है। रील्स उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने का एक लागत प्रभावी तरीका प्रदान करती है। सिर्फ एक स्मार्टफोन और बुनियादी संपादन उपकरणों के साथ, व्यवसाय उच्च गुणवत्ता वाली सामग्री बना सकते हैं। इससे रील्स सभी स्तरों पर उद्यमियों के लिए एक सुलभ विपणन समाधान बन जाता है।

ग्राहक सहभागिता का निर्माण- रील्स लाइक, कमेंट, शेयर और सेव के माध्यम से बातचीत को प्रोत्साहित करती है। व्यवसाय इस सुविधा का उपयोग अपने दर्शकों के साथ सीधे जुड़ने के लिए कर सकते हैं, जैसे पर्दे के पीछे के क्षण, उत्पाद प्रदर्शन, ग्राहक प्रशंसापत्र या त्वरित सुझाव। इस प्रकार की सामग्री अधिक व्यक्तिगत और प्रासंगिक लगती है, जो ग्राहकों के बीच विश्वास और निष्ठा बनाने में मदद करती है।

रचनात्मकता और नवाचार का प्रदर्शन- रील्स व्यवसायों को रचनात्मक कहानी कहने का प्रयोग करने की अनुमति देती है। चाहे वह ट्रेंडिंग संगीत, चुनौतियां या कहानी कहने की तकनीक का उपयोग करना हो, ब्रांड अपने उत्पादों को अनूठे तरीकों से प्रस्तुत कर सकते हैं। रचनात्मक सामग्री न केवल मनोरंजन करती है, बल्कि दर्शकों पर स्थायी प्रभाव भी छोड़ती है।

बिक्री और रूपांतरण को बढ़ावा देना- रील्स केवल दृश्यों के बारे में नहीं हैं– वे बिक्री को भी बढ़ा सकते हैं। स्पष्ट कॉल-टू-एक्शन, उत्पाद लिंक या प्रचार प्रस्ताव शामिल करके, व्यवसाय दर्शकों को खरीदारी करने के लिए मार्गदर्शन कर सकते हैं। कई ब्रांड उत्पाद सुविधाओं को उजागर करने, छूट की घोषणा करने या नए संग्रह लॉन्च करने के लिए रील्स का उपयोग करते हैं, जिससे दर्शक प्रभावी रूप से ग्राहक बन जाते हैं।

डिजिटल युग में प्रतिस्पर्धी बने रहना- जैसे-जैसे अधिक व्यवसाय डिजिटल मार्केटिंग रणनीतियों को अपना रहे हैं, प्रतिस्पर्धी बने रहने के लिए नवाचार की आवश्यकता है। रील्स युवा दर्शकों से जुड़ने का एक आधुनिक तरीका प्रदान करती है जो पाठ या छवियों की बजाय वीडियो सामग्री को पसंद करते हैं। जो व्यवसाय इस प्रवृत्ति के अनुकूल होते हैं, उनके प्रतिस्पर्धी बाजार में प्रासंगिक बने रहने और आगे बढ़ने की अधिक संभावना होती है।

प्रभावी रील्स बनाने के लिए सुझाव- वीडियो को छोटा, आकर्षक और दृश्यात्मक रूप से आकर्षक रखें। ट्रेंडिंग ऑडियो और हैशटैग का उपयोग करें। प्रत्यक्ष बिक्री के बजाय कहानी कहने पर ध्यान केंद्रित करें। पोस्टिंग में स्थिरता बनाए रखें। भविष्य की सामग्री में सुधार करने के लिए प्रदर्शन का विश्लेषण करें।

रील्स ने फेसबुक और इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों पर व्यवसायों के अपने दर्शकों के साथ संवाद करने के तरीके को बदल दिया है। वे उत्पादों और सेवाओं को बढ़ावा देने का एक गतिशील, किफायती और अत्यधिक आकर्षक तरीका प्रदान करते हैं। लघु-रूप वीडियो सामग्री की शक्ति का लाभ उठाकर, व्यवसाय अपनी पहुंच बढ़ा सकते हैं, ग्राहक संबंधों को मजबूत कर सकते हैं, और डिजिटल युग में टिकाऊ विकास प्राप्त कर सकते हैं।

डॉ विजय गर्ग सेवानिवृत्त प्रधान शैक्षिक स्तंभकार प्रख्यात शिक्षाशास्त्री स्ट्रीट कौर चंद एमएचआर मलौट पंजाब

भारत के संविधान निर्माता : डॉ. भीमराव अंबेडकर

महेन्द्र तिवारी

14 अप्रैल 1891 को मध्य प्रदेश के महू नामक सैन्य छावनी में जन्मे डॉ. भीमराव रामजी अंबेडकर भारतीय इतिहास के उन विरले महापुरुषों में से हैं जिन्होंने अपने जीवनकाल में अनगिनत संघर्षों का सामना करते हुए एक ऐसी विरासत छोड़ी, जो आज भी करोड़ों लोगों को प्रेरणा देती है। उनके पिता रामजी मालोजी सकपाल ब्रिटिश भारतीय सेना में सूबेदार के पद पर थे और वे स्वयं महार जाति से संबंध रखते थे, जिसे तत्कालीन समाज में अछूत माना जाता था। परिवार में 14 भाई-बहनों में से भीमराव सबसे छोटे थे। जाति-आधारित भेदभाव की पीड़ा उन्होंने बचपन से ही झेली, जब विद्यालय में उन्हें अन्य बच्चों के साथ बैठने तक की अनुमति नहीं थी और अध्यापक भी उनकी कापियाँ छूने से परहेज करते थे।

इन विपरीत परिस्थितियों के बावजूद भीमराव ने शिक्षा को अपना हथियार बनाया। 1907 में उन्होंने मैट्रिक परीक्षा उत्तीर्ण की और मुंबई के एलफिंस्टन कॉलेज में प्रवेश लिया। यह उस युग में किसी दलित के लिए एक असाधारण उपलब्धि थी। बड़ौदा के महाराजा सयाजीराव गायकवाड़ तृतीय ने उनकी प्रतिभा को पहचाना और उन्हें छात्रवृत्ति प्रदान की, जिससे वे 1913 में उच्च शिक्षा के लिए संयुक्त राज्य अमेरिका जा सके। कोलंबिया विश्वविद्यालय में उन्होंने अर्थशास्त्र में स्नातकोत्तर और फिर पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। उनका शोध प्रबंध ब्रिटिश भारत में प्रान्तीय वित्त का विकास अत्यंत उल्लेखनीय था। इसके पश्चात वे लंदन गए जहाँ उन्होंने ग्रेज इन से बैरिस्टर की उपाधि और लंदन स्कूल ऑफ इकोनॉमिक्स से डॉक्टर ऑफ साइंस की डिग्री प्राप्त की। अपने जीवन में उन्होंने कुल 32 से अधिक उपाधियाँ और डिग्रियाँ अर्जित कीं, जो उन्हें विश्व के सर्वाधिक शिक्षित व्यक्तियों में से एक बनाती हैं।

शिक्षा पूरी करके भारत लौटने के बाद भी अंबेडकर को सामाजिक भेदभाव का कड़वा अनुभव होता रहा। बड़ौदा दरबार में नौकरी के दौरान उन्हें किसी हिंदू कर्मचारी ने फाइलें देने से मना कर दिया और धर्मशाला में ठहरने की जगह न मिलने पर एक पारसी सराय में शरण लेनी पड़ी। इन अनुभवों ने उनके भीतर यह विश्वास और भी पक्का कर दिया कि जाति-व्यवस्था का उन्मूलन किए बिना भारत का कोई भविष्य नहीं है। 1920 में उन्होंने मूकनायक नामक पाक्षिक पत्रिका का प्रकाशन शुरू किया, जो दलित आवाज का पहला संगठित मंच बनी। इसके बाद 1927 में बहिष्कृत भारत और 1930 में जनता जैसे प्रकाशनों के माध्यम से उन्होंने जन-जागरण का अभियान चलाया।

1927 का महाड़ सत्याग्रह उनके नेतृत्व की एक ऐतिहासिक घटना थी। महाराष्ट्र के महाड़ में चवदार तालाब से पानी पीने के अधिकार के लिए उन्होंने हजारों अनुयायियों के साथ सत्याग्रह किया। सार्वजनिक जल स्रोतों तक दलितों की पहुँच को इस संघर्ष ने एक नई दिशा दी। उसी वर्ष उन्होंने मनुस्मृति का सार्वजनिक दहन कर यह घोषणा की कि वे किसी भी ऐसी व्यवस्था को स्वीकार नहीं करेंगे जो जन्म के आधार पर मनुष्य को हीन ठहराती हो। 1930 में नासिक के कालाराम मंदिर में दलितों के प्रवेश के लिए उन्होंने 5 वर्षों तक संघर्ष चलाया।

महात्मा गांधी और डॉ. अंबेडकर के बीच का वैचारिक संघर्ष भारतीय इतिहास का एक महत्वपूर्ण अध्याय है। 1932 में ब्रिटिश प्रधानमंत्री रैम्जे मैकडॉनाल्ड ने सांप्रदायिक निर्णय के अंतर्गत दलितों के लिए पृथक निर्वाचन मंडल की घोषणा की थी। गांधीजी ने इसके विरोध में आमरण अनशन आरंभ किया। अंततः 24 सितंबर 1932 को पुणे की यरवदा जेल में पूना पैक्ट पर हस्ताक्षर हुए, जिसके तहत पृथक निर्वाचन मंडल के स्थान पर संयुक्त निर्वाचन मंडल में दलितों के लिए आरक्षित सीटों की संख्या 71 से बढ़ाकर 148 कर दी गई। इस समझौते को अंबेडकर ने अपनी विवशता में स्वीकार किया, परंतु जीवन भर उन्होंने माना कि दलितों को पृथक राजनीतिक प्रतिनिधित्व मिलना चाहिए था। राजनीतिक क्षेत्र में डॉ. अंबेडकर की भूमिका उतनी ही प्रभावशाली रही। 1936 में उन्होंने स्वतंत्र मजदूर पार्टी की स्थापना की और 1937 के प्रांतीय चुनावों में इस दल ने बंबई विधानसभा की 17 में से 15 सीटें जीतीं। 1942 में वे वायसराय की कार्यकारी परिषद के सदस्य बनाए गए, जहाँ उन्होंने श्रम विभाग का कार्यभार संभाला। इस दौरान उन्होंने कारखाना अधिनियम, खान अधिनियम और श्रम कल्याण से संबंधित अनेक महत्वपूर्ण सुधार किए। 8 घंटे का कार्य दिवस निर्धारित करने में उनकी भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। स्वतंत्र भारत के निर्माण में डॉ. अंबेडकर का सर्वाधिक ऐतिहासिक योगदान रहा संविधान की रचना में। 29 अगस्त 1947 को संविधान सभा ने उन्हें प्रारूप समिति का अध्यक्ष नियुक्त किया। इस समिति ने लगभग 2 वर्ष 11 माह और 18 दिनों में 60 से अधिक देशों के संविधानों का अध्ययन करते हुए भारतीय संविधान का मसौदा तैयार किया। यह संविधान 26 नवंबर 1949 को अंगीकृत किया गया और 26 जनवरी 1950 को लागू हुआ। इसमें 395 अनुच्छेद, 8 अनुसूचियाँ और 22 भाग थे। डॉ. अंबेडकर ने सुनिश्चित किया कि संविधान में मौलिक अधिकार, नीति-निदेशक तत्व, सामाजिक न्याय और समता के सिद्धांत पर्याप्त रूप से स्थापित हों। अनुच्छेद 17 के अंतर्गत अस्पृश्यता का उन्मूलन, अनुच्छेद 14 के अंतर्गत कानून के समक्ष समानता और अनुच्छेद 15 के अंतर्गत धर्म, मूल वंश, जाति, लिंग या जन्म स्थान के आधार पर भेदभाव का निषेध इसी दूरदर्शिता के प्रतिफल हैं।

स्वतंत्र भारत की पहली सरकार में डॉ. अंबेडकर को विधि मंत्री बनाया गया। इस पद पर रहते हुए उन्होंने हिंदू कोड बिल प्रस्तुत किया, जिसमें विवाह, तलाक, उत्तराधिकार और गोद लेने जैसे विषयों में महिलाओं को पुरुषों के समान अधिकार दिए जाने का प्रस्ताव था। परंतु संसद में इस बिल का तीव्र विरोध हुआ और सरकार के भीतर भी इसे समर्थन नहीं मिला। इससे क्षुब्ध होकर डॉ. अंबेडकर ने 1951 में विधि मंत्री पद से त्यागपत्र दे दिया। यह उनके जीवन की एक बड़ी राजनीतिक पराजय थी, किंतु इसके बाद भी वे सामाजिक न्याय की लड़ाई से पीछे नहीं हटे।

डॉ. अंबेडकर की बौद्धिक विरासत उनके विपुल साहित्य में संजोई हुई है। जाति का विनाश (1936) उनकी सर्वाधिक चर्चित रचना है जिसमें उन्होंने जाति-व्यवस्था की जड़ों पर गहरा प्रहार किया। बुद्ध और उनका धम्म उनकी अंतिम और सर्वाधिक व्यक्तिगत कृति है। इसके अलावा पाकिस्तान और भारत का विभाजन, शूद्र कौन थे, अछूत कौन थे, रुपए की समस्या, भारत में जातियाँ जैसे अनेक ग्रंथ उनकी दार्शनिक, आर्थिक और सामाजिक सोच की गहराई को प्रकट करते हैं। वे केवल दलितों के नेता नहीं, बल्कि एक समग्र विचारक थे जिनकी अर्थशास्त्र, राजनीतिशास्त्र, समाजशास्त्र, इतिहास और धर्म पर समान पकड़ थी। 14 अक्टूबर 1956 को नागपुर में आयोजित एक विशाल समारोह में डॉ. अंबेडकर ने बौद्ध धर्म ग्रहण किया। यह उनके जीवन का एक अत्यंत महत्वपूर्ण निर्णय था। उनके साथ उस दिन लगभग 5 लाख अनुयायियों ने भी बौद्ध धर्म की दीक्षा ली। यह धर्मांतरण उनके लिए केवल धार्मिक परिवर्तन नहीं, बल्कि एक सामाजिक और मानवीय क्रांति का प्रतीक था। उन्होंने कहा था कि वे हिंदू के रूप में जन्मे, परंतु हिंदू के रूप में नहीं मरेंगे। उन्हें बौद्ध धर्म में वह समतावादी आधार मिला जिसकी वे तलाश कर रहे थे। इस घटना को धम्म क्रांति कहा जाता है और इसके बाद देश भर में लाखों दलितों ने बौद्ध धर्म की शरण ली। 6 दिसंबर 1956 को दिल्ली में अपने निवास पर डॉ. अंबेडकर का निधन हो गया। तब उनकी आयु 65 वर्ष थी और वे मधुमेह सहित कई गंभीर बीमारियों से पीड़ित थे। उनके निधन की सूचना मिलते ही पूरे देश में शोक की लहर फैल गई। मुंबई में उनका बौद्ध रीति से अंतिम संस्कार किया गया और अनुमानतः 15 लाख से अधिक लोग उनकी अंतिम यात्रा में शामिल हुए। उनकी समाधि मुंबई के दादर स्थित चैत्यभूमि में है, जो आज भी लाखों श्रद्धालुओं के लिए तीर्थस्थल है।

1990 में भारत सरकार ने उन्हें देश के सर्वोच्च नागरिक सम्मान भारत रत्न से विभूषित किया। 14 अप्रैल उनके जन्मदिन को अंबेडकर जयंती के रूप में राष्ट्रीय अवकाश घोषित किया गया है। संसद भवन में उनकी तैलचित्र स्थापित है और देश के सैकड़ों विश्वविद्यालय, संस्थान, सड़कें और चौराहे उनके नाम पर हैं। 2015 में भारत सरकार ने लंदन में उनके उस घर को क्रय किया जहाँ वे पढ़ाई के दौरान रहते थे और उसे डॉ. अंबेडकर राष्ट्रीय स्मारक के रूप में विकसित किया।

डॉ. भीमराव अंबेडकर का जीवन इस बात का प्रमाण है कि विपरीत से विपरीत परिस्थितियों में भी ज्ञान, संकल्प और करुणा के बल पर मनुष्य असाधारण ऊँचाइयों को छू सकता है। वे न केवल करोड़ों दलितों के मसीहा थे, बल्कि स्वतंत्र भारत की संवैधानिक आत्मा के निर्माता भी थे। उन्होंने एक ऐसे भारत का स्वप्न देखा जहाँ हर नागरिक को उसकी जाति, धर्म या जन्म से नहीं, बल्कि उसकी मानवीय गरिमा से पहचाना जाए। उनके विचार और उनका संघर्ष आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने उनके जीवनकाल में थे। जब तक भारत में सामाजिक न्याय और समता की आकांक्षा जीवित है, डॉ. अंबेडकर की स्मृति अमर रहेगी।